Knowledgeable Research (KR) 2026, Vol., (5):02
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

वैश्वीकरण, कृत्रिम मेधा और हिंदी साहित्य

डॉ. लक्ष्मण काळे *
हिंदी विभागाधाक्ष्य,
इंदिरा गांधी (वरिष्ठ) महाविद्यालय, सिडको, नवीन नांदेड ,महाराष्ट्र

Abstract

वर्तमान समाज और वर्तमान समय में वैश्वीकरण, डिजिटाइजेशन, सोशल मीडिया और कृत्रिम मेधा के आविष्कारों ने इस सदी के प्रत्येक व्यक्ति का उपकरणीय दुनिया से रिश्ता जोड़ दिया है। इन शक्तियों ने भाषा, संस्कृति और साहित्य को गहराई से प्रभावित किया है। वैश्वीकरण ने विश्व भाषा के रूप में हिंदी भाषा एवं हिंदी साहित्य को अंतरराष्ट्रीय मंच एक विशिष्ट पहचान प्रदान किया है, वहीं कृत्रिम मेधा ने साहित्यिक सृजन, अनुवाद, प्रकाशन और अध्ययन की प्रक्रिया को सरल और व्यापक बनाया है। आज वह लोगों के रोजमर्रा के जीवन की जरूरी आवश्यता बनता जा रहा है। साथ ही कृत्रिम मेधा लोगों के मन में एक चमत्कारिक रूप में अवतरित होता हुआ नजर आ इस रिसर्च पेपर में वैश्वीकरण और कृत्रिम मेधा की अवधारणा, उनके प्रभाव, अवसर, चुनौतियाँ तथा हिंदी साहित्य के भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

Keywords: *वैश्वीकरण, कृत्रिम मेधा, हिंदी साहित्य, तकनीक, डिजिटल माध्यम आदि।*

Received: 08/01/2026
Accepted: 26/02/2026
Published: 28/02/2026

***Corresponding Author:**
डॉ. लक्ष्मण काळे
Email: laxmankale530@gmaiol.com

प्रस्तावना :

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने साहित्य को लेकर एक अवधारणा प्रस्तुत की है, "जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृति का संचित प्रतिबिंब होता है तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी बदल होता जाता है।" शुक्ल जी की इन विचारों का जब हम वर्तमान समय के युग में संबंध लगाते हैं तो यह स्पष्ट होने लगता है कि जैसे-जैसे समाज बदलता है, वैसे-वैसे साहित्य की विषयवस्तु, शैली और माध्यम में भी परिवर्तन होता है। वैश्वीकरण ने भौगोलिक सीमाओं को लगभग समाप्त कर दिया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने ज्ञान के आदान-प्रदान को तीव्र गति प्रदान की है। इसी परिवेश में कृत्रिम मेधा एक सशक्त तकनीकी उपकरण के रूप में उभरी है, जो मानव के सोचने, सीखने और सृजन करने की प्रक्रिया को प्रभावित कर रही है। हिंदी साहित्य, जो कभी क्षेत्रीय सीमाओं तक सिमटा माना जाता था, आज वैश्विक मंच पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रहा है। इस परिवर्तन में वैश्वीकरण और कृत्रिम मेधा की महत्वपूर्ण भूमिका हैं|

वैश्वीकरण की अवधारणा :

वैश्वीकरण का अर्थ है विश्व के विभिन्न देशों, समाजों और संस्कृतियों का आपस में जुड़ना। इस प्रक्रिया में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी संबंध सीमाओं से ऊपर उठकर वैश्विक स्तर पर स्थापित होते हैं। जनसंचार, इंटरनेट और तकनीक के विकास ने वैश्वीकरण को और अधिक गति दी है।

डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं "वैश्वीकरण ने राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर सांस्कृतिक आदान-प्रदान को संभव बनाया है"1 वैश्वीकरण के कारण विचारों, भाषाओं और साहित्य का आदान-प्रदान बढ़ा है। हिंदी

साहित्य भी इसी प्रक्रिया के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुँचा है। साथ ही अंतरराष्ट्रीय मंचों से अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियां, अंतर्राष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन, काव्य सम्मेलन जैसे उपक्रमों का भी आयोजन विश्व व्यापक रूप में हो रहा हैं। जब एक भाषा विश्व स्तर पर जाकर वैश्विक समुदाय के विचारों को एक दूसरों तक पहुंच जाती है। तब वह निश्चित रूप से वैश्वीकरण के रूप में अपने अस्तित्व का निर्वहन करती रहती है।

हिंदी साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव:

अंतरराष्ट्रीय पहचान :

आज हिंदी साहित्य का अनुवाद अनेक विदेशी भाषाओं में हुआ है, जिससे इसकी वैश्विक पहुँच बढ़ी है। जिसके परिणामस्वरूप इसकी वैश्विक पहुँच निरंतर बढ़ी है। अंग्रेज़ी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी, जापानी, चीनी आदि भाषाओं में हिंदी की प्रमुख रचनाओं का अनुवाद हुआ है। इस अनुवाद प्रक्रिया ने हिंदी साहित्य को अंतरराष्ट्रीय पाठक वर्ग से जोड़ा है और भारतीय समाज, संस्कृति तथा जीवन-दृष्टि को विश्व मंच पर प्रस्तुत किया है। उदाहरण के तौर पर देखें तो गीतांजलि श्री का 'रेत समाधि' यह उपन्यास अंग्रेजी भाषा में अनुवादित होकर बुकर अवॉर्ड जैसे अवार्ड को प्राप्त करता है यह हिंदी के वैश्विक स्थिति का बहुत बड़ा परिचय एक है।

विषयवस्तु का विस्तार :

आधुनिक हिंदी साहित्य में प्रवासी जीवन, सांस्कृतिक टकराव, बाज़ारवाद और तकनीकी अकेलेपन जैसे विषय प्रमुख रूप से उभरकर सामने आए हैं। यह परिवर्तन समाज में आए वैश्वीकरण और तकनीकी विकास का स्वाभाविक परिणाम है। साहित्य समाज से जुड़ा हुआ होता है, इसलिए जैसे-जैसे सामाजिक परिस्थितियाँ बदलती हैं, वैसे-वैसे साहित्य की विषयवस्तु भी परिवर्तित होती है। इसी संदर्भ में नामवर सिंह का कथन — "साहित्य वही जीवित रहता है जो समय की चुनौतियों से संवाद करता हैं"2

कृत्रिम मेधा : अवधारणा एम आविष्कार

कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence – AI) आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की वह महत्वपूर्ण शाखा है, जिसका उद्देश्य मशीनों को मानव-समान बौद्धिक क्षमताएँ प्रदान करना है। इसमें सोचने, सीखने, निर्णय लेने, समस्या समाधान करने तथा भाषा को समझने जैसी मानवीय क्षमताओं का अनुकरण किया जाता है। सरल शब्दों में कहा जाए तो कृत्रिम मेधा ऐसी तकनीक है, जिसके माध्यम से मशीनें मनुष्य की तरह व्यवहार करने लगती हैं।

कृत्रिम मेधा इस अद्भुत तकनीक के जनक जॉन मैकार्थी माने जाते हैं। वे इस क्षेत्र के सबसे महान नवप्रवर्तकारों में से एक थे। उन्होंने सन 1955 में 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' शब्दों को गढ़ा और सन 1956 में डार्ट माउथ कॉलेज के कैंपस में आयोजित सम्मेलन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अपनी एक परिभाषा प्रस्तुत की। "सन 1956 के डार्ट माउथ ग्रीष्मकालीन अनुसंधान परियोजना ने एआई को एक वैज्ञानिक अनुशासन के रूप में औपचारिक रूप दिया, जिसमें यह प्रस्तावित किया गया की मशीनें सीखने या बुद्धिमता के किसी भी पहलू का अनुकरण कर सकती है।"3 डार्ट माउथ को एआई का जन्म स्थान माना जाता है। जिससे एआई एक अलग क्षेत्र के रूप में स्थापित हुआ। उनके साथ ही एलन ट्यूरिंग, मार्विन मिंस्की जैसे कई अग्रदूतों ने एआई की न्यू राखी। इसी विचार से आगे चलकर ट्यूरिंग टेस्ट की अवधारणा का जन्म हुआ। फिर इसमें नए-नए अविष्कार होने लगे, नए-नए लोग जुड़ने लगे और धीरे-धीरे एआई का प्रचार और प्रसार बढ़ता रहा जो साहित्य के क्षेत्र में भी अपना प्रभावी कार्य दिखने लगा।

कृत्रिम मेधा और हिंदी साहित्य

1. लेखन में सहयोग :

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

AI लेखन की भाषा, व्याकरण और संरचना को सुधारने में सहायक है। आज के समय में AI लेखन को बेहतर बनाने में मदद करता है। जब हम कोई लेख, निबंध या साहित्यिक रचना लिखते हैं, तो कई बार भाषा कठिन हो जाती है, व्याकरण में गलती हो जाती है या विचार ठीक से क्रम में नहीं आ पाते। ऐसे में AI एक सहायक की तरह काम करता है। स्पष्ट है कि AI की मदद से हम साहित्य में बदलाव की दिशा में अग्रसर होने लगे हैं। हां इतनी संभावना अवश्य है कि साहित्य के नवनिर्मिति में AI का जितना अधिक उपयोग हम करंगे उतनी भावनात्मक क्षमता कम होती जाएगी।

2. अनुवाद में योगदान :

AI आधारित अनुवाद ने हिंदी साहित्य को वैश्विक पाठकों तक पहुँचाया है।

"अनुवाद साहित्य को नई संस्कृति से जोड़ता है।"4 डॉ. नामवर सिंह के अनुसार अनुवाद केवल भाषा परिवर्तन की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि वह साहित्य को एक नई सांस्कृतिक भूमि प्रदान करता है। जब किसी हिंदी साहित्यिक रचना का AI के माध्यम से अनुवाद किया जाता है, तो वह रचना विदेशी पाठकों के लिए समझने योग्य बन जाती है। इससे भारतीय समाज, उसकी संवेदनाएँ, संघर्ष और मूल्य वैश्विक पाठकों के सामने प्रस्तुत होते हैं। इस प्रकार AI आधारित अनुवाद हिंदी साहित्य को नई संस्कृतियों से जोड़ने का माध्यम बनता है|

डिजिटल माध्यम और हिंदी साहित्य :

डिजिटल युग में साहित्य, ब्लॉग, ई-पुस्तक, ऑडियो बुक और सोशल मीडिया के माध्यम से व्यापक हुआ है। डिजिटल युग ने साहित्य के स्वरूप और प्रसार के तरीकों में बड़ा परिवर्तन किया है। पहले साहित्य मुख्य रूप से पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं और गोष्ठियों तक सीमित रहता था, लेकिन आज ब्लॉग, ई-पुस्तक, ऑडियो माध्यम और सोशल मीडिया के कारण साहित्य अधिक व्यापक और सुलभ बन गया है। अब साहित्य पाठक तक स्वयं पहुँच रहा है, उसे ढूँढने की आवश्यकता नहीं पड़ती। वर्तमान समय के सर्च इंजनों के द्वारा किसी भी बात की जानकारी हासिल करनी हो तो गूगल जैसे सर्च इंजन पर जाने के बाद एआई के माध्यम से दूसरे ही पल हम जानकारी प्राप्त करते हैं। हां इतना अवश्य है कि इसकी पुष्टि के लिए पुस्तकों या दूसरे आधारों को भी देखना जरूरी हैं।

1. ब्लॉग के माध्यम से सहित्य का विस्तार :

ब्लॉग ने नए और युवा लेखकों को अपनी रचनाएँ प्रकाशित करने का अवसर दिया है। कोई भी लेखक बिना प्रकाशक के अपनी कविता, कहानी या लेख इंटरनेट पर ब्लॉक के माध्यम से डाल सकता है। इससे साहित्य अवाम तक पहुंचने में देरी नहीं लगती और विशेष सहायक के रूप में प्रस्तुत ब्लॉग की लिंक के जरिए भी हम तुरंत आवाम तक पहुंच सकते हैं। इससे हमारे विचारों को एक नया मंच मिला है। ब्लॉग के माध्यम से लेखक और पाठक के बीच सीधा संवाद भी संभव हुआ है।

2. ई-पुस्तकों का योगदान :

ई-पुस्तकों ने मनुष्य को मोबाइल और लैपटॉप तक पहुँचा दिया है। अब बड़ी-बड़ी पुस्तकें जेब में रखी जा सकती हैं। ई-पुस्तकें सस्ती, आसानी से उपलब्ध और पर्यावरण-अनुकूल हैं। इससे हिंदी साहित्य का पाठक वर्ग बढ़ा है, विशेषकर युवाओं में। यदि ई-पुस्तक जैसी सुविधा या, इंटरनेट, गूगल जैसे संसाधनों के अभाव में हमें पुस्तक की हार्ड कॉपी सामने रखकर ही पढ़ना पड़ता था अब बिना कागज के इस डिजिटल दुनिया में हम ढेरों पुस्तकें पढ़ सकते हैं। यह डिजिटल युग, एआई या इंटरनेट की सुविधा का बहुत बड़ा लाभ है। कई प्रकाशक अपनी ओर से ई-पुस्तक नेट पर मुहैया कराते हैं। जिससे पाठक वर्ग में एक नव चैतन्य का भाव देखने को मिलता है।

3. ऑडियो साहित्य का महत्व :

ऑडियो बुक और पॉडकास्ट ने उन लोगों को साहित्य से जोड़ा है, जो पढ़ने में असमर्थ हैं या जिनके पास समय की कमी है। यात्रा करते समय या काम करते हुए भी साहित्य सुना जा सकता है। इससे साहित्य सुनने की परंपरा फिर से जीवित हुई है।

4. सोशल मीडिया और साहित्य :

फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब और व्हाट्सऐप जैसे मंचों पर कविताएँ, लघु कथाएँ और विचार तेजी से फैलते हैं। कम शब्दों में गहरी बात कहने की नई शैली विकसित हुई है। सोशल मीडिया ने साहित्य को लोकप्रिय और जनसामान्य के निकट बनाया है। हम यदि कोई किताब न भी पढ़ सके तो वह सुन जरूर सकते हैं। इस सोशल मीडिया ने हमें ध्वनि या वीडियो के रूप में भी पुस्तकों को सुनने की सुविधा मुहैया कराई हैं। समय की कमी के कारण हम हमारे व्यस्तता में भी सुनने का काम जरुर कर सकते हैं। जिसके द्वारा किसी पुस्तक की वैचारिकता, भाव, कथानक, शिल्प, भाषा आदि से पूर्णतः परिचित हो सकते हैं। यह सोशल मीडिया की मानो एक प्रकार से साहित्यिक दिन है।

5. पाठक वर्ग का विस्तार :

डिजिटल माध्यमों के कारण साहित्य अब केवल पढ़े-लिखे वर्ग तक सीमित नहीं रहा। ग्रामीण क्षेत्र, युवा पीढ़ी और विदेशों में रहने वाले लोग भी हिंदी साहित्य से जुड़ रहे हैं। इससे हिंदी साहित्य की पहुँच वैश्विक हुई है। अब पाठक वर्ग एक नए रूप और अंदाज से साहित्यिक गतिविधियों को अपना रहा है और परिपूर्ण बना रहा है। उदाहरण के तौर पर देखे तो यूट्यूब के माध्यम से एक किताब को सुनने समझने के लिए सुदूर क्षेत्र तक के पाठक इस सुविधा को अपना कर उस किताब तक पहुंच सकते हैं। आज का समय प्रौद्योगिकी, सोशल मीडिया, कृत्रिम मेधा, इंटरनेट, मशीनें, कंप्यूटर, मोबाइल जैसे विभिन्न संसाधनों से युक्त होते हुए अपने आप में परिवर्तन की दिशा में बहुत बड़ी क्रांति कर रहा है। यह सब होते हुए भी इन उपकरणीय दुनिया में कुछ मर्यादाएँ भी हमारे सामने खड़ी रहती हैं जो चुनौतियों के रूप में भी हम उसे देखते हैं।

चुनौतियाँ :

1. भाषाई शुद्धता की समस्या :

आज के डिजिटल युग में हिंदी भाषा की शुद्धता पर असर पड़ा है। लोग जल्दी-जल्दी लिखते हैं, इसलिए वर्तनी और व्याकरण की गलतियाँ हो जाती हैं। सोशल मीडिया पर हिंदी के साथ अंग्रेज़ी शब्दों का ज़्यादा प्रयोग होने लगा है, जिससे भाषा की शुद्धता की ओर नजर नहीं जाती। विशेष कर वॉइस टाइपिंग के इस जमाने में मशीन जब आवाज को सुनती है तो सही ढंग का उच्चारण न होने के कारण वहां गलत शब्द भी टाइप किया जा सकते हैं जिससे भाषाई शुद्धता पर प्रश्न निर्माण हो जाता है। साथ ही यह भी देखा जाता है कि कई लोग देवनागरी लिपि की जगह रोमन लिपि में हिंदी लिखते हैं, जिससे शब्दों का सही रूप बिगड़ जाता है। AI और मशीन अनुवाद भी कभी-कभी गलत अर्थ दे देते हैं, जिससे भाषा की भावना ठीक से व्यक्त नही हों पाती।

2. रचनात्मक मौलिकता का संकट :

आज के तकनीकी और डिजिटल युग में रचनात्मक मौलिकता पर संकट दिखाई देता है। लेखन करते समय नई सोच की जगह पहले से लिखी गई बातों को दोहराने लगे हैं। AI और इंटरनेट से आसानी से सामग्री मिल जाने के कारण मौलिक विचारों की कमी महसूस होती है। महादेवी वर्मा लिखती हैं "साहित्य आत्मा की अनुभूति है, यांत्रिक प्रक्रिया नहीं।"5 जब रचना में स्वयं की अनुभूति और अनुभव नहीं होते, तो वह प्रभावहीन हो जाती है। नकल और तैयार सामग्री के अधिक प्रयोग से साहित्य की गहराई और संवेदना कम हो रही है। जब एआई के रूप में मशीन ही यह सब कर रही है तो वहां भाव और भावनाओं का महत्व

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

निश्चित रूप से कम होने लगता हैं। साहित्य में जीवंतता का अभाव भी दर्ज होने लग सकता है।

3 लागत :

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को लागू करने में काफी अधिक लागत आती है। AI सिस्टम को विकसित करने, उसे प्रशिक्षित करने और उसका रखरखाव करने के लिए विशेष तकनीकी ज्ञान, उन्नत सॉफ्टवेयर और महंगे हार्डवेयर की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, AI को समय-समय पर अपडेट करना भी ज़रूरी होता है, जिससे खर्च और बढ़ जाता है।

इस बढ़ी हुई लागत के कारण छोटे व्यवसाय, शैक्षणिक संस्थान और कम आर्थिक संसाधन वाले वर्ग AI का उपयोग नहीं कर पाते। इसका लाभ केवल बड़े और समृद्ध संस्थानों तक सीमित रह जाता है। परिणामस्वरूप समाज में तकनीकी असमानता उत्पन्न हो सकती है।

4 . भावनात्मकता की कमी :

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) बिना भावनाओं के काम करता है। वह तर्क और डेटा के आधार पर निर्णय लेता है। यह उसकी एक विशेषता है, जिसमें कुछ फायदे हैं, लेकिन नुकसान भी हैं। AI हमेशा एक जैसा और तार्किक निर्णय देता है, पर वह मानवीय भावनाओं को पूरी तरह समझ नहीं सकता। डॉ. नामवर सिंह तकनीक के संदर्भ में कहते हैं कि "संवेदना के बिना कोई भी रचना या व्यवस्था मानवीय नहीं हो सकती।"6 भावनात्मक समझ की कमी के कारण AI इंसानों की संवेदनाओं, दर्द, खुशी और मानसिक स्थिति को सही ढंग से नहीं पहचान पाता। खासकर स्वास्थ्य, शिक्षा, परामर्श और व्यक्तिगत सहायता जैसे क्षेत्रों में यह एक बड़ी सीमा बन जाती है, जहाँ भावनात्मक संवेदना बहुत ज़रूरी होती है।

AI आधारित असिस्टेंट में वास्तविक भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं होती। इससे उपयोगकर्ता को कभी-कभी अकेलापन या भावनात्मक दूरी महसूस हो सकती है। जटिल मानवीय भावनाओं को समझने में AI की यह कमी उसकी प्रभावशीलता को सीमित कर देती है।

5 . आत्म निर्भरता से दूरी :

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर अत्यधिक निर्भरता एक गंभीर समस्या बनती जा रही है। जब AI आधारित सिस्टम दैनिक जीवन और कार्यों का अभिन्न अंग बन जाते हैं, तो व्यक्ति अपनी सोच, निर्णय क्षमता और कौशल पर कम भरोसा करने लगता है। इससे आत्मनिर्भरता की भावना कमजोर हो जाती है।

AI पर बढ़ती निर्भरता जोखिम भी पैदा करती है। उदाहरण के लिए, यदि AI द्वारा संचालित वित्तीय प्रणाली, स्वास्थ्य सेवा या प्रशासनिक प्रणाली अचानक खराब हो जाए, तो इससे गंभीर नुकसान हो सकता है। ऐसे मामलों में मानवीय हस्तक्षेप के बिना समस्या का समाधान कठिन हो जाता है।

इसलिए आवश्यक है कि AI का उपयोग सहायक साधन के रूप में किया जाए, न कि पूर्ण विकल्प के रूप में। मानव निर्णय क्षमता और तकनीकी उपयोग के बीच संतुलन बनाए रखना बहुत ज़रूरी है, ताकि आत्म निर्भरता बनाए रख सके।

अवसर :

हिंदी साहित्य का वैश्विक प्रसार :

हिंदी साहित्य का प्रसार आज राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर वैश्विक स्तर तक पहुँच चुका है। अनुवाद, प्रवासी हिंदी लेखकों, विश्वविद्यालयों और डिजिटल माध्यमों ने हिंदी साहित्य को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई नामवर सिंह का कथन यही हैं कि "साहित्य की शक्ति उसकी भाषा में

नहीं, उसकी संवेदना में होती है, और वही उसे विश्वव्यापी बनाती है।"7 इस कथन का अर्थ है कि साहित्य भाषा की सीमा से ऊपर उठकर मानवीय संवेदना के कारण दुनिया भर में स्वीकार किया जाता है। यही कारण है कि हिंदी साहित्य वैश्विक पाठकों तक पहुँच सका है। साहित्य को दुनिया के हर प्रांत में पहुंचाने के लिए प्रौद्योगिकी, तकनीकी, एआई जैसे उपकरण-संसाधन हम सबके लिए मानो एक प्रकार से बहुत बड़ा अवसर प्रदान करते हैं।

नए लेखकों को मंच :

वैश्वीकरण के युग में नए लेखकों को अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करने के लिए पहले की तुलना में अधिक अवसर मिले हैं। पहले साहित्यिक मंच सीमित थे और प्रकाशन कठिन था, लेकिन आज ब्लॉग, सोशल मीडिया, ई-पत्रिकाएँ और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने नए रचनाकारों के लिए रास्ते खोल दिय हैं| ब्लॉग और सोशल मीडिया के माध्यम से नए लेखक अपनी कविताएँ, कहानियाँ और विचार सीधे पाठकों तक पहुँचा सकते हैं। इससे लेखक और पाठक के बीच सीधा संवाद स्थापित होता है और लेखक को तुरंत प्रतिक्रिया भी मिलती है|

इस प्रकार डिजिटल मंचों ने साहित्य को अधिक लोकप्रिय बनाया है। अब साहित्य केवल कुछ चुनिंदा लोगों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि शोध और आलोचना में तकनीकी सहायता सामान्य युवा भी साहित्यिक अभिव्यक्ति कर पा रहें हैं।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण, प्रौद्योगिकी, डिजिटाइजेशन कृत्रिम मेधा, सोशल मीडिया ने हिंदी साहित्य को नई दिशा और व्यापकता प्रदान की है। तकनीक यदि साहित्य की सहायक बने, तो हिंदी साहित्य अपनी संवेदनशीलता, मौलिकता और सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखते हुए निरंतर विकसित होता रहेगा। साहित्य को पढ़ने के लिए कागज से बनी कोई किताब हमारे हाथ में हो यह अनिवार्यता अब खत्म हो चुकी है। उसके स्थान पर कई उपकरणों, मशीनों आधुनिक सुविधाओं ने हमारे सामने पुस्तक प्रस्तुत करने के लिए सहायता प्रदान की है। केवल पुस्तक पढ़ना ही नहीं बल्कि पुस्तक के किसी अंश या पूर्ण पुस्तक को सुनने की सुविधा भी उपलब्ध कराई है। इसलिए वर्तमान समय में डिजिटाइजेशन, कृत्रिम मेधा, इंटरनेट, संगणक फेसबुक, यूटूब आज के और आने वाले कल के मानव समाज के लिए अनिवार्य घटकों के रूप में प्रभावी ढंग से कार्य करने लगेंगे। इतना ही नहीं तो यह सब हमारी अनिवार्य जरूरतों के रूप में भी शामिल होने की कगार पर हैं।

संदर्भ सूची :

1. शर्मा, रामविलास – हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, पृ. 42–45

2. नामवर सिंह, साहित्य की पहचान, पृ. 63

3. https://www.teneo.ai नामक वेबसाइट से

4. नामवर सिंह, दूसरी परंपरा की खोज, पृ. 118

5. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ, पृ. 91

6. डॉ. नामवर सिह साहित्य और समाज, पृष्ठ 91

7. डॉ .नामवर सिह साहित्य और समाज, पृष ५६

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)